शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण
सत्र 4: शिष्यत्व क्या है? (2ग)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन).

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **यूहन्ना 15:8**

8 इसी से मेरे पिता की महिमा होती है, कि तुम बहुत फल लाते हो, और मेरे चेले ठहरते हो।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* ***- यूहन्ना 15***

चरण 4*:* व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. मसीह की आज्ञा के अनुसार प्रजनन का अर्थ है दूसरों में परमेश्वर की परिपूर्णता को पुन: उत्पन्न करना। प्रशिक्षक के लिए यह कैसा दिखता है? प्रशिक्षु?

दो. पवित्रशास्त्र स्पष्ट हैं कि क्या होता है जब एक बेल (या एक शिष्य) फल नहीं देती है (अन्य शिष्यों को पुन: उत्पन्न करती है)। फल देने वाली बेल के साथ अलग क्या होता है?

तीन. BiblicalMentoring.org "शिष्यों को प्रशिक्षित करने" (शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए शिष्यों को प्रशिक्षित करने) के बारे में है। क्या आप वर्तमान में किसी अन्य शिष्य-निर्माता को प्रशिक्षित करने के लिए किसी को प्रशिक्षित कर रहे हैं?

चार. परमेश्वर ने अपने राज्य का विस्तार करने के लिए शिष्यत्व प्रक्रिया को पसंदीदा तरीके के रूप में चुना। आपको क्या लगता है कि हममें से इतने कम लोग इस आदेश/आदेश का पालन करते हैं?

पाँच. एक-से-एक शिष्यत्व प्रशिक्षण एक धीमी विधि प्रतीत होती है, लेकिन तब तक प्रतीक्षा करें जब तक कि आप इस बात का प्रमाण न देख लें कि यह समय के भीतर प्रमुख परिणाम देता है।

चरण 5*: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 2 सी लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

प्रजनन

मसीह ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे दूसरों में जीवन की परिपूर्णता को पुन: उत्पन्न करें जो उन्होंने उसमें पाई (यूहन्ना 15:8)। उसने चेतावनी दी कि, "मुझ में जो जो शाखा फल नहीं लाती, वह [मेरा पिता] उठा ले जाती है; और हर एक डाली जो फल लाती है, वह उसकी छंटाई करता है, कि वह और फल लाए" (यूहन्ना 15:2)।

एक परिपक्व शिष्य को अन्य विश्वासियों को यह सिखाना चाहिए कि कैसे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीना है और उन्हें दूसरों को सिखाने के लिए दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार करना चाहिए। कोई भी व्यक्ति अपने आप में अंत नहीं है। प्रत्येक शिष्य एक प्र ि या का हिस्सा है, प्रजनन के माध्यम से अपने राज्य का विस्तार करने के लिए परमेश्वर की चुनी हुई विधि

का हिस्सा है। हम इसे जानते हैं क्योंकि मसीह ने मनुष्यों को चेला बनाया और अपने शिष्यों को चेला बनाने की आज्ञा दी (मत्ती 28:19)।

परमेश्वर किसी भी तरीके का चयन कर सकता था जो वह सुसमाचार फैलाना चाहता था और अपने राज्य का निर्माण करना चाहता था। यह कोई संयोग नहीं था कि उस साम्राज्य के निधन के लंबे समय बाद ग्रीक दुनिया की आम भाषा थी। ग्रीक भाषा में कुछ बारीकियां हैं जो इसे सत्य संप्रेषित करने के लिए आदर्श बनाती हैं।

इसके अलावा, ज्ञात दुनिया को एकजुट करने वाले शाही रोमन राजमार्गों का उद्देश्य उसके रथों को ले जाना हो सकता है, लेकिन ईसाई सुसमाचार उनका सबसे मूल्यवान वाणिज्य था।

जिस तरह परमेश्वर ने सुसमाचार फैलाने के लिए यूनान और रोम को अनजाने उपकरणों के रूप में इस्तेमाल किया, उसी तरह वह मसीह के जन्म से पहले प्रिंटिंग प्रेस, रेडियो या यहां तक कि टेलीविजन का आविष्कार भी कर सकता था। यीशु एक प्रसिद्ध लेखक, एक रेडियो बाइबल शिक्षक या पहला टीवी प्रचारक हो सकता था। परमेश्वर के विकल्प सीमित नहीं थे।

लेकिन इनमें से किसी भी परिष्कृत तरीके को अपनाने के बजाय, यीशु ने शिष्यत्व का विकल्प चुना। उसने व्यक्तिगत रूप से पुरुषों के एक छोटे समूह को प्रशिक्षित किया और उन्हें दूसरों को सिखाने के लिए दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार किया। उसने उन्हें शिष्य बनाने की आज्ञा दी।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि सबसे पहले मैंने मसीह की बुद्धि पर सवाल उठाया। सतह पर व्यक्तियों में यह निवेश बहुत धीमा प्रतीत हुआ। यीशु को बारह पुरुषों को शिष्य बनाने में तीन साल लग गए, और उनमें से एक असफल रहा।

मैंने सोचा कि मैं भाग्यशाली रहूंगा यदि तीन वर्षों में मैं एक व्यक्ति को इतनी अच्छी तरह से प्रशिक्षित कर सकूं कि वह दूसरों को प्रशिक्षित करने में मेरे साथ शामिल हो सके और उस दर पर मैं लॉस एंजिल्स यहूदी बस्ती में 2 मिलियन लोगों में सेंध लगाने में कभी भी सक्षम नहीं हो पाऊंगा। अधिक से अधिक मैं अपने जीवनकाल में केवल सोलह लोगों को शिष्य बनाने की उम्मीद कर सकता था। और इससे क्या फायदा होगा? मेरा पाप यह था कि मुझे परमेश्वर की बुद्धि और संप्रभुता पर संदेह था।

लेकिन जब मैंने शिष्यत्व का अध्ययन किया, तो मुझे पता चला कि परमेश्वर ने अपने राज्य का निर्माण करने के लिए एक ठोस और प्रभावी तरीका चुना था। यह सरसों के बीज की तरह छोटी से शुरू होगा, लेकिन तेजी से बढ़ेगा क्योंकि यह दुनिया भर में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। उनका चर्च एक स्थिर संरचना के बजाय एक गतिशील आंदोलन होगा। शिष्यत्व ही विश्वासियों की मात्रा और गुणवत्ता दोनों का उत्पादन करने का एकमात्र तरीका है जो परमेश्वर चाहता है।

गणित ध्वनि है

क्या आप सुसमाचार के साथ 4 अरब से अधिक लोगों तक पहुंचने की कल्पना कर सकते हैं? महान आदेश को पूरा करने का यह कार्य इतना चौंका देने वाला लगता है कि दूरदर्शी भी अभिभूत हो सकते हैं और कुछ भी नहीं कर सकते हैं। लेकिन बाइबल एक विधि पुस्तक के साथ-साथ एक संदेश पुस्तक भी है। और मसीह का तरीका शिष्य बनाना है।

जब मैं यहूदी बस्ती में आया, तो मुझे सुसमाचार प्रचार करने का जुनून था। मान लीजिए कि पहले दिन मैं एक व्यक्ति को मसीह के पास ले गया। इसके बाद, मैं शेष वर्ष के लिए हर दिन एक और व्यक्ति को मसीह के पास ले गया। वर्ष के अंत तक मैं 365 लोगों को प्रभु की ओर निर्देशित कर चुका होता। अगर मैं अगले बत्तीस वर्षों तक ऐसा करना जारी रखता, तो मैं 11,680 तक पहुंच जाता। काफी उपलब्धि!

दूसरी ओर, मान लीजिए कि मैं उस पहले वर्ष मसीह के लिए केवल एक व्यक्ति तक पहुंचा। हालाँकि, इस बार, मैंने उसे पूरे एक वर्ष के लिए शिष्य बनाया, ताकि वह पूरी तरह से ईसाई धर्म में स्थापित हो और दूसरे तक पहुंचने और अनुशासित करने में सक्षम हो जाए। अगले वर्ष हम दोनों एक-एक अतिरिक्त व्यक्ति के पास पहुंचे और उन दोनों को दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षित किया। यदि हम इसे बत्तीस वर्षों तक जारी रखते हैं, तो 4,294,967,296 शिष्य होंगे—दुनिया की जनसंख्या! (तालिका 1 देखें।

मैंने अपनी मूल झिझक का उल्लेख किया। लेकिन अब मैं अपना उत्साह साझा करता हूं। यदि लॉस एंजिल्स में हमारे वर्तमान स्टाफ सदस्यों में से प्रत्येक हर दो साल में एक व्यक्ति को इतनी अच्छी तरह से शिष्य बनाता है कि उनके शिष्य दूसरों को प्रशिक्षित करने में हमारे साथ शामिल हो सकें, तो हम बत्तीस वर्षों में पूरे लॉस एंजिल्स यहूदी बस्ती तक पहुंच सकते हैं - दो मिलियन लोग। इसका मतलब है कि मुझे बत्तीस वर्षों में केवल सोलह लोगों में निवेश करना है। और यह एक प्रबंधनीय कार्य है।

भले ही शिष्यत्व धीरे-धीरे शुरू होता है, लंबे समय में आध्यात्मिक गुणन जोड़ की तुलना में समान समय में कहीं अधिक लोगों तक पहुंचता है।

महान आयोग संभव है!

(पीपी.20बी-24ए)

अगले पृष्ठ पर तालिका 1 देखें

तालिका 1
शिष्यत्व और इंजीलवाद की तुलना

सालों	इंजीलवादी	शिष्य
1	365	2
2	730	4
3	1,095	8
4	1,460	16
5	1,825	32
6	2,190	64
7	2,555	128
8	2,920	256
9	3,285	512
10	3,650	1,024
11	4,015	2,048
12	4,380	4,096
13	4,745	8,192
14	5,110	16,384
15	5,475	32,768
16	5,840	65,536
17	6,205	131,072
18	6,570	262,144
19	6,935	524,288
20	7,300	1,048,576
21	7,665	2,097,152
22	8,030	4,194,304
23	8,395	8,388,608
24	8,760	16,777,216
25	9,125	33,554,432
26	9,490	67,108,864

27	9,855	134,217,728
28	10,220	268,435,456
29	10,585	536,870,912
30	10,950	1,073,741,824
31	11,315	2,147,483,648
32	11,680	4,294,967,296

चरण 6: व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें और प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करें।

स्रोत: द मेकिंग ऑफ ए डिसाइपल डॉ . कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261011